डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महारानी कॉलेज, आरा

बी० ए० द्वितीय सेमेस्टर - I
विषय - संस्कृत, MJC - I

सुबन्त परिचय

शब्दों के तीन भेद हैं -
1. सुबन्त 2. तिङन्त 3. अव्यय।
'अपदं न प्रयुञ्जीत' कहकर संस्कृत में सुबन्त तथा तिङन्त के द्वारा निर्मित पद का ही प्रयोग किया जा सकता है। सार्थक प्रातिपदिक शब्दों को ही पद बनाया जा सकता है, जिसके लिए प्रातिपदिक नाम रख देने के बाद सुबन्त प्रत्ययों को लगाकर पद बन जाने पर ही भाषा में उनका प्रयोग कर सकते हैं।

सुबन्त - सुबन्त शब्द दो पदों से मिलकर बना है - सुप् + अन्त अर्थात् सुप् है अन्त में जिनके उन्हें सुबन्त कहते हैं। सुप् प्रत्याहार 21 है - 'स्वौजसमौट्छष्टा-भ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्-ङ्योस्सुप्' सूत्र के प्रथम अक्षर सु से लेकर सूत्र के अन्तिम अक्षर 'प्' को मिलाकर 'आदिरन्त्येन सहेता' सूत्र से 'सुप्' प्रत्याहार बनाया जाता है। ये 21 'सुप्' प्रत्यय जिन सार्थक शब्दों के अन्त में लगा दिये जाते हैं - तभी वह पद कहलाता है।

सुप्तिङन्तं पदम्।
संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण अव्यय को सुबन्त कहते हैं। वैयाकरणों ने शब्दों को चार प्रकार से विभाजित किया है -
1. नाम 2. आख्यात 3. उपसर्ग 4. निपात।
नाम की प्रातिपदिक संज्ञा होती है तथा

सुप् प्रत्यय लगाने से संज्ञा पद की सिद्धि होती है।

सुप् प्रत्यय

प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

अवशिष्ट रूप

प्रथमा	सु (:)	औ	अः
द्वितीया	अम्	औ	अः
तृतीया	आ	भ्याम्	भिः
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यः
पञ्चमी	अः	भ्याम्	भ्यः
षष्ठी	अः	ओः	आम्
सप्तमी	इ	ओः	सु

तिङन्त प्रत्यय (तिङन्त परिचय)

सुप् प्रत्ययों से शब्द रूपों का निर्माण किया जाता है। इसी प्रकार तिङन्त प्रत्ययों को जोड़कर धातु रूपों को बनाया जाता है। 'तिङ्' एक प्रत्याहार है जिसके अन्तर्गत 18 प्रत्यय आते हैं। इनमें से नौ परस्मैपद में प्रयुक्त होते हैं तथा नौ आत्मनेपद में। इन्हीं तिङ् प्रत्ययों से धातुओं के पुरुष तथा वचन के भेद को ज्ञात किया जाता है। महर्षि पाणिनि ने इन प्रत्ययों को इस प्रकार कहा है-

"तिप्तस्झि - सिप्थस्थ - मिब्वस्मस् - ताऽऽताम्झ थासाथाम्ध्वम् - इड्वहिमहिङ्"।

पुरुष तथा वचन के अनुसार इन प्रत्ययों को इस प्रकार समझा जा सकता है-

परस्मैपद

पुरुष	वचन		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपद

पुरुष	वचन		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट्	वहि	महिङ्